SET - II

पूर्णांक – 100 समय : तीन घंटे

सामान्य-निर्देश:

I. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
II. प्रश्न के विविध भागों के उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखें।
III. प्रश्नों के सामने दर्शाये गये अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।

खंड- 'क'

प्र.1 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर उससे संबद्ध प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

बीते दिन कब आने वाले!
मेरी वाणी का मधुमय स्वर,
विश्व सुनेगा कान लगाकर,
दूर गए पर मेरे उर की धड़कन को सुन पानेवाले!
बीते दिन कब आनेवाले
विश्व करेगा मेरा आदर
हाथ बढ़ाकर, शीश नवाकर,
पर न खुलेंगे नेत्र प्रतीक्षा में जो रहते थे मतवाले!
बीते दिन कब आनेवाले!
मुझमें है देवत्व जहाँ पर,
झुक जाएगा लोक वहाँ पर,
पर न मिलेंगे मेरी दुर्बलता को अब दुलरानेवाले!
बीते दिन कब आनेवाले!

प्र.1 (क) 'बीते दिन कब आने वाले' -इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 2
(ख) 'मेरे उर की धड़कन को सुन पाने वाले'- ऐसा कहे हुए कवि कैसे लोगों को दूर जाने की बात कह रहा है? 2
(ग) कैसे नेत्र कवि की प्रतीक्षा में में हुआ करते थे? 2
(घ) देवत्व के समक्ष लोक के झुकने का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2
(ङ) 'पर न मिलेंगे, मेरी दुर्बलता को अब दुलरानेवाले'- इस पंक्ति में कवि ने किन भावों की अभिव्यक्ति की है? 2

उत्तर (क) जीवन में घटनाक्रम तेजी से चलता रहता है। समय का पहिया चलता रहता है। अवस्था बदलती रहती है। इस क्रम में अच्छे दौर भी गुजर जाते हैं। जो व्यतीत हो चुका है, स्मृतियों में डूबकर हम उसके प्रति मोह-ग्रस्त हो जाते हैं। जो हम खो चुके हैं, वह हम फिर पाना चाहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। ऐसा होना अंसभव है। कवि पुराने दिनों में फिर लौटना चाहता है लेकिन फिर स्वयं को समझाता है- बीते दिन कब आनेवाले।

(ख) कवि कहता है- ऐसा हो सकता है कि अब भी यह संसार मेरी वाणी के माधुर्य में डूब जाए। मेरी वाणी का आकर्षण और इस रस से उसे सम्मोहित कर ले, यह सहज संभव है, लेकिन मेरी वास्तविक स्थिति को समझ पाना जो मेरे हृदय की धड़कन सुन पाते थे। जो मैं कहता हूँ, उसे तो लोग सुन सकते हैं लेकिन जो मेरे हृदय की प्रत्येक धड़कन का सत्य है, वह कोई सुन -समझ नहीं पाएगा। सुन पाने वाले लोग दूर, बहुत दूर जा चुके हैं।

(ग) विश्व की पहुँच मेरे अन्तर्मन तक नहीं है। उसकी क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ ऊपरी है, बाहरी हैं। मेरी उपलब्धियों के समक्ष संसार झुक जाएगा, यह संभव है। संसार के लोग

Scanned with CamScanner

हाथ बढ़ाकर और सिर झुकाकर मेरा स्वागत करें ऐसा हो सकता हैं, लेकिन जिन आँखों में मेरे लिए प्रतीक्षा हुआ करती थी, वे बंद हो चुकी हैं। मेरी प्रतीक्षा करने वाले दूर जा चुके हैं। ऐसा कहता कवि अकेलेपन और पीड़ा का अनुभव करता है।

(घ) कवि की अभिव्यक्त है- जहाँ मैं अच्छा हूँ, नेक हूँ, जहाँ मुझमें देवत्व है, सद्‌गुण हैं, संसार वहाँ मेरे समक्ष झुक जाएगा, लेकिन जहाँ मैं कमजोर हूँ वहाँ यह विश्व मेरा कटु आलोचक होगा। मेरी कमजोरियाँ और विवशताएँ जो समझ सकते थे, जिन में मेरे प्रति गहरी संवेदनशीलता थी, वे अब नहीं हैं। वे मेरे मन में हैं, मेरी यादों में है, लेकिन आस-पास, दूर-नजदीक कहीं नहीं हैं।

(ङ) कवि आगे कहता है- मेरी कमजोरियों के प्रति संवेदनशील समझ का अभाव इस विश्व में होगा। जो अपने होते हैं, जो हृदय की प्रत्येक धड़कन का अर्थ समझने में सक्षम, समर्थ होते हैं, वे अब नहीं हैं। मेरी दुर्बलताओं के बावजूद मुझे स्नेह, प्रेम देनेवाले अब नहीं हैं। कवि का दुःख गहरा है। गहरा आंतरिक भावनात्मक लगाव जुड़ाव रखनेवाले लोगों का न होना उसकी पीड़ा का कारण है।

प्र. 2 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

जब बच्चे को संबंध-ज्ञान कुछ-कुछ होने लगता है तभी दुःख से उस भेद की नींव पड़ जाती है जिसे करुणा कहते हैं। बच्चा पहले परखता है कि जैसे हम हैं वैसे ही ये और प्राणी भी हैं और बिना किसी विवेचना-क्रम के स्वाभाविक प्रवृति द्वारा, वह अपने अनुभवों का आरोप दूसरे प्राणियों पर करता है। फिर कार्य-कारण-संबंध से अभ्यस्त होने पर दूसरों के दुःख के कारण या कार्य को देखकर उनके दुःख का अनुमान करता है और स्वंय एक प्रकार का दुःख अनुभव करता है। प्रायः देखा जाता है कि जब भी माँ झूठ-मूठ 'ऊँ-ऊँ करके रोने लगती है तब बच्चे भी रो पड़ते है। इसी प्रकार जब उनके किसी भी भाई या बहिन को कोई मारने उठता है तब वे कुछ चंचल हो उठते हैं।

दुःख की श्रेणी में प्रवृति के विचार से करुणा का उल्टा क्रोध है। क्रोध जिसके प्रति उत्पन्न होता है उसकी हानि की चेष्ठा की जाती है। करुणा जिसके प्रति उत्पन्न होती है उसकी भलाई का उद्योग किया जाता है। किसी पर प्रसन्न होकर भी लोग उसकी भलाई करते है। इस प्रकार पात्र को भलाई की उत्तेजना दुःख और आनंद दोनों की श्रेणियों में रखी गई है। आनंद की श्रेणी मे ऐसा कोई शुद्ध मनोविकार नहीं है, जो पात्र की हानि की उत्तेजना करें, पर दुःख की श्रेणी में ऐसा मनोविकार है जो पात्र की भलाई की उत्तेजना करें, पर दुःख की श्रेणी में ऐसा मनोविकार है जो पात्र की भलाई की उत्तेजना करता है। लोभ से, सि मैंने आनंद की श्रेणी मं रखा है, चाहे कभी-कभी और व्यक्तियों या वस्तुओं की हानि पहुँच जाएँ पर जिसे जिस व्यक्ति या वस्तु का लाभ होगा, उसकी हानि वह कभी न करेगा। लोभी महमूद ने सोमनाथ को तोड़ा, पर भीतर से जो जवाहरत निकले उसको उनको खूब सँभालकर रखा। नूरजहाँ के रूप के लोभी जहाँगीर ने शेर अफगान को मरवाया, पर नूरजहाँ को बड़े चैन से रखा।

ऊपर कहा चुका है कि मनुष्य ज्यों ही समाज में प्रवेश करता है, उनके सुख और दुःख का बहुत-सा अंश दूसरे की क्रिया या अवस्था पर अवलंबित हो जाता है और उसके मनोविकारों के प्रवाह तथा जीवन के विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है। वह दूसरों के दुःख से दुखी और दूसरों के सुख से सुखीं होने लगता है।

(क) बच्चों को करुणा से परिचय कब से होने लगता है? 2

(ख) लेखक के अनुसार 'करुणा' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

Scanned with CamScanner

(ग) करुणा का उल्टा क्रोध है। कैसे? 2

(घ) मनुष्य के 'मनोविकारों' के प्रवाह तथा जीवन के विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है'-कब? कैसे? 2

(ङ) इस गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 2

उत्तर (क) बच्चे का संबंध-ज्ञान जब कुछ-कुछ होने लगता है, तभी दुःख से उस भेद की नींव पड़ जाती है, जिसे करुणा कहते हैं। संबंध-ज्ञान से पहले, लेखक, के अनुसार, करुणा की भावना का विकास नहीं होता। बच्चे को जब, धुँधले रुप से ही सही ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति मेरा अपना है तब उसके दुःख का अनुभव वह स्वयं अपने अंदर करने लगता है। यह करुणा की ओर उसका कदम है।

(ख) जिससे हमारा आंतरिक भावनात्मक रिश्ता है, उसका दुःख समझना करुणा के लिए आवश्यक है। उस अपने का दुःख समझने तक ही हम सीमित नहीं रहते, हममें उसका दुःख कम या दूर करने की इच्छा भी उत्पन्न होती है। लेखक के अनुसार दूसरों की दुःख जब हमें इतना दुःखी कर दे कि हम उसकी दुःख-मुक्ति की कामना करें, तो यह दुःख और ऐसी कामना करुणा है।

(घ) मनुष्य जब सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है तब उसके दुःख का, सुख का, क्षेत्र बड़ा हो जाता है। व्यापक हो जाता है। व्यक्ति समाज की एक इकाई तो है लेकिन उसका सुख-दुःख सबसे अलग, सबसे कटा-हटा नहीं है। वह दूसरों के सुख-दुःख के अवसरों पर उनके साथ होता है। खुशी के मौके पर वह बधाई देता है और दुःख के मौके पर संवेदना का प्रकटन करता है। ऐसे में मनोविकारों के प्रवाह तथा जीवन के लिए विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है।

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा- 'करुणा और हम'।

खंड- 'ख'

प्र. 3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- 5

(क) तकनीकी शिक्षा

(ख) बढ़ती जनसंख्या- सिमटते साधन

(ग) पराधीन सपनेहु सुख नाहीं

उत्तर **(क) तकनीकी शिक्षा**

आज विश्व की सम्पूर्ण प्रगति तकनीकी शिक्षा पर ही निर्भर है। आज विकास कार्य का हर क्षेत्र, तकनीकी शिक्षा के कारण ही आगे बढ़ रहा है। चिकित्सा, कृषि शिक्षा, सेना, सुरक्षा, प्रशासन और प्रबन्धन, परिवहन आदि में विशेष तकनीकों की जरूरत है। आज पूरी दुनियाँ कम्प्यूटर युग में प्रवेश कर चुकी है। आज विकास के हरक्षेत्र में तथा हर विभाग में कम्प्यूटर का कमाल नजर आ रहा है।

भारत के संदर्भ में भी तकनीकी शिक्षा का भी उतना ही महत्त्व है जितना विकसित देशों में है। भारत में भी तकनीकी शिक्षा का विशेष अभिप्राय है। भारत अभी उन्नत अथवा विकसित राष्ट्र नहीं है। यह एक उन्नतशील एवं विकासशील देश है। भारत की बेरोजगारी दूर करने के लिए भी तकनीकी शिक्षा का विशेष योगदान है। शिक्षा के दो पक्ष है- सामान्य या सैद्धान्तिक शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा। कला और विज्ञान के स्नातक तथा स्नातकोत्तर में बेकार की संख्या बहुत अधिक है। इस कारण भारत सरकार ने अपनी शिक्षा नीति में कुछ परिवर्त्तन किया है। इनके द्वारा रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। रोजगारोन्मुख शिक्षा में तकनीकी शिक्षा को शामिल किया गया है। प्रारंभिक तकनीकी शिक्षा के लिए सरकार के द्वारा 'औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गई है जिसमें सर्टिफिकेट

Scanned with CamScanner

एवं डिप्लोगा कोर्स चलते है इसमें प्रोडक्शन, डिजाईन कम्प्यूटर, सिविल, मेकेनिकल आदि की शिक्षायें दी जाती हैं।

उच्च तकनीकी शिक्षाओं के भी बहुत सारे केन्द्र हैं जिसमें विशेष तकनीकी शिक्षायें दी जाती हैं भारत की अभी तक तकनीकी शिक्षा विकास होगा, उतना ही हमारा देश आगे बढ़ेगा। तकनीकी शिक्षा से ही भारत देश विकासशील से विकसित तथा उन्नतशील से उन्नत राष्ट्र बनेगा। तभी हमारा देश अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और जापान की श्रेणी में विकसित राष्ट्र बनेगा तथा खुशहाल बनेगा।

प्र. 4 'हिन्दुस्तान' दैनिक कोकर इंडस्ट्रियल एरिया, राँची- 1 के स्थानीय संपादक को एक पत्र लिखिए, जिसमें कमरतोड़ महँगाई के प्रति चिंता प्रकट की गयी हो। 5

अथवा

पिताजी को पत्र लिखकर पाँच सौ रूपये मनीआर्डर द्वारा मंगवाइए।

उत्तर सेवा में,

स्थानीय संपादक
दैनिक हिन्दुस्तान
कोकर इंडस्ट्रियल एरिया, राँची- 1

महोदय,

मैं आपके समाचार पत्र के सुप्रसिद्ध स्तंभ 'आपकी राय' के माध्यम से कमरतोड़ महँगाई की ओर सरकार और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। दिनोंदिन प्रत्येक वस्तु की कीमतें आसमान छू रही हैं जिसका सबसे अधिक असर निम्न तथा मध्यम वर्ग पर पड़ रहा है। सब्जियों, दलहन, खाद्य तेलों आदि के मूल्य में इतनी वृद्धि हो गई है कि आम आदमी परेशान है। लोगों की आमदनी उस अनुपात में नहीं बढ़ती जिस गति से महँगाई बढ़ती है। परिणामस्वरूप लोगों को कर्ज लेना पड़ता है। 'आमदनी अठन्नी, खर्चा रूपया' वाली स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस दशा में लोग कैसे जीवन-यापन करें, उनका जीवन स्तर कैसे सुधरेगा? ये सवाल खड़े हो गये हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप जनसमान्य को परेशान करनेवाली कमरतोंड महँगाई की इस समस्यों को अपने समाचारपत्र द्वारा सरकारी महकमे तक अवश्य पहुँचाएँ। रोजमर्रा की वस्तुएँ सस्ती होनी चाहिए न कि टी०वी०, फ्रिज, कार, जैसी विलासिता की वस्तुएँ। आशा है कि सरकार आम जनता को इस कमर तौड़ महँगाई से राहत दिलाने के फौरी उपाय करेगी।

सधन्यवाद!

भवदीय
राजेश कुमार
मोराबादी, राँची-8
दिनांक, 12.05.2010

प्र. 5 खुफिया विभाग के उपनिदेशक ने नक्सलवाद को देश के लिए खतरा बताया है। उन्होंने देश के अलग-अलग हिस्सों में इसके प्रचार-प्रसार की भी जानकारी दी। इस पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। 5

अथवा

विश्व-बाजार में भारत की स्थिति कैसे सुदृढ़ हो सकती है? इसके लिए कौन-कौन से कदम उठाये जाने की आवश्यकता है? इन्हें ध्यान में रखकर एक आलेख तैयार कीजिए।

Scanned with CamScanner

नक्सलवाद देश के लिए खतरा की घंटी: वर्मा राँची, खुफिया ब्यूरो (आई०बी०) के उपनिदेशक के०पी० वर्मा ने कहा कि देश के विभिन्न राज्यों में बढ़ते नक्सलवाद से देश की एकता और अखंड़ता को खतरा पैदा हो गया है। विगत दो दशक में नक्सलवादियों ने हमले करने के तरीके बदले हैं, जिन पर गंभीतरा से सोचने-विचारने की जरूरत है।

श्री वर्मा ने शुक्रवार को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड की ओर से राँची में आयोजित दो दिवसीय अतंराष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन देश की आंतरिक सुरक्षा पर बात करते हुए कहा कि नक्सली मोबाइल विस्फोट, रॉकेट लांचर, आदि का इस्तेमाल करने लगे हैं, जो खतरे की घंटी है। उन्होंने कहा कि राजनीतिज्ञों, पुलिस पोस्टों, सैनिक शिविरों व सरकारी विभागों पर लगातार हो रहे नक्सली हमले बेहद चिंताजनक और दु:खदायी हैं। छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, उड़ीसा जैसे राज्यों का बड़ा हिस्सा नक्सलवादियों के चपेट में है। एक अक्टूबर, 2003 को आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के काफिले को उड़ाने के प्रयास से इस बात की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है कि नक्सलवाद किस कदर अपनी जड़ें जमा चुका है।

उपनिदेशक श्री वर्मा ने कहा कि नक्सली वायरलेस सेटों का उपयोग सैन्य या पुलिस विभाग की योजनाओं को सुनने के लिए करते थे। उन्होंने आगे कहा कि अब नक्सली वायरलेस सेटों का प्रयोग रिमोट कंट्रोल के रूप में करते हुए श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों को अंजाम देने लगे हैं। उन्होंने बताया कि विभाग को नक्सलियों के पास आधुनिक तकनीक से विस्फोट करने की भी जानकारी है। हमारे देश में अशांति बनाये रखने के लिए कई बाहरी शक्तियाँ नक्सलियों को मदद पहुँचाते हैं। इस स्थिति में आंतरिक सुरक्षा को चाक-चौबंद रखने के लिए हमें पुख्ता उपाय करने होंगे।

इस अवसर पर कैबिनेट सचिवालय के अवर सचिव आर०के० शाह ने कहा कि आंतकवाद से ग्रस्त देशों में 'डर्टी बम' का खतरा बढ़ रहा है। इस बम से जान-माल की कई गुना ज्यादा बर्बादी हो सकती है। इसलिए हमें चौकस रहने की जरूरत है। श्री शाह ने कहा कि इस तरह के बमों का इस्तेमाल एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशनों, सब-वे, ऐतिहासिक इमारतों, दूतावासों या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर कर सकते हैं। सेमिनार में उपस्थिति यू०के० की 11वीं ई०ओ०डी० रेजीमेंट के प्रमुख जॉन ऐलिशन ने इराक व अफगानिस्तान में विद्रोहियों के हमलें से निबटने की अत्याधुनिक तकनीक व कार्रवाई के बारे में बताया।

प्र. 6 किसी एक विषय पर फीचर लिखिए- 5

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर

अथवा

नेतरहाट का प्राकृतिक-सौंदर्य

उत्तर

गायिकी की मल्लिका: लता मंगेशकर

एक बालिका जिसके सर से पिता का साया बचपन में ही उठ गया। साया भी वैसे पिता का जो गायन में निरंतर ऊँचाईयों की ओर अग्रसर और अपने बच्चों में गीत-संगीत के संस्कार डालनेवाला। पिता के अचानक हट चुके साये से वह बालिका घबराई नहीं, बल्कि और भी समर्पित हो संगीत-साधना में जुट गई। हाँ, वह बालिका आज की सुप्रसिद्ध गायिका स्वर सामज्ञी लता मंगेशकर ही है। पं० दीनानाथ मंगेशकर से मिले संस्कारों को लता ने अपनी नैसर्गिक प्रतिभा से सँवारा और नई ऊँचाई दी।

गायिकी के क्षेत्र में लता मंगेशकर वह नाम है, जिसने चित्रपट संगीत के माध्यम से जन-जन की अभिरूचि को संवारा है। यहाँ तक कि शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों का

Scanned with CamScanner

दृष्टिकोण लता ने बदल दिया। अब चित्रपट-संगीत से लता का सधा हुआ सुरीला गान सुनते-सुनते आम लोग भी स्वर में गाने-गुनगुनाने लगे हैं। लोगों में संगीत की लय और सुरीलेपन की समझ बढ़ने लगी है। आज लोग शास्त्रीय गायन और लता के गायन में से लता के गायन को ज्यादा पसंद करते हैं। कारण है - लता के गानपन, उसका सुरीलापन और मस्त कर देने वाला स्वर। श्रोता को तो रागों के बदले सुमधुर गानपन से मतलब होता है और यह लता के स्वर में सौ फीसदी है। लता की लोकप्रियता का मूल मर्म भी यही है। लता के गाने कोमलता और मधुरता का अद्‌भुत संगम है, मानो उनका निजी जीवन उनके स्वर में छलक उठता है। कुछेक लोग कहते है कि लता ने करूण रस के गाने बहुत अच्छे गाये हैं, पर संगीत मर्मज्ञों का कहना है कि लता ने मुग्ध श्रृंगार के गाने मध्य और द्रूत लय में बहुत अच्छे गाये हैं। लता को शास्त्रीय संगीत की व्यापक जानकारी है। लता के साढ़े तीन मिनट के गाने और तीन घंटे के शास्त्रीय संगीत की महफिल का आनंदात्मक मूल्य एक ही है। लता का हर गान अपने-आप में संपूर्ण कलाकृति के समान होता है, उसमें स्वर, लय और शब्दार्थ की त्रिवेणी होती है। वास्तव में किसी गाने का महत्त्व इस बात पर निर्भर है कि उसमें रसिकको आनंदित करने की सामर्थ्य कितनी है।

लता जी चित्रपट-संगीत की अनुभिषिक्त स्वर साम्राज्ञी हैं। अनेक गायक-गायिकाओं की तुलना में उनकी लोकप्रियता सर्वाधिक है। आधी शताब्दी से भी ज्यादा वक्त गुजरा है और लता जन-मन पर छाई हुई हैं। यह एक ऐसा चमत्कार है जिसे हम सब प्राय अपने आस पास इर्द-गिर्द होता हुआ देख रहे हैं।

खण्ड- 'ग'

प्र. 7 निम्नलिखित काव्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखें- **2+2+2+2= 8**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हुए बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर

(क) उपर्युक्त पंक्तियाँ किस पाठ की हैं ?
(ख) इस पाठ में किसका वर्णन है?
(ग) इसमें किस भाषा का प्रयोग किया गया है?
(घ) 'दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए तथा डाल की तरह लचीले वेग से' कौन सा अलंकार है ?

उत्तर (क) उपर्युक्त पंक्तियाँ पतंग पाठ की हैं।
(ख) इस पाठ में बच्चों के जन्मजात स्वभाव का वर्णन है।
(ग) इस पाठ में खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है।
(घ) 'दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए' तथा डाल की तरह लचीले वेग से में उपमा अलंकार है।

अथवा

जिंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;

Scanned with CamScanner

इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
बहुत तुम्हें प्यारा है।
गरवीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है

(क) प्रस्तुत काव्यांश किस रचना की है?
(ख) कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा है?
(ग) कवि का प्रिय कौन है?
(घ) इसकी भाषा क्या है?

उत्तर (क) प्रस्तुत काव्यांश गजानन माधव मुक्ति बोध रचित कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' की है

(ख) कवि ने जीवन के सभी सुख दुख संघर्ष अवसाद कड़वे मीठे अनुभव आदि को सहर्ष स्वीकारा है।

(ग) इस काव्यांश में यह नहीं स्पष्ट हो पाता कि कवि का प्रिय कौन है? माँ, पिता अथवा प्रिय या अलौकिक सत्ता कोई भी कवि का प्रिय हो सकता है।

(घ) इसकी भाषा खड़ी बोली हिन्दी है।

प्र. 8 निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का सौंदर्य बोध बताइए- 3+3= 6

(क) ममता के बादल की मंडराती कोमलता-
भीतर पिराती है
कमजोर और अक्षम अब हो जाती है आत्मा यह
छटपटाती छाती के भवितव्यता डराती है

(ख) फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)

(ग) घन भेरी-गर्जन से सजग, सुप्त अंकुर
डर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं ऐ विप्लव के बादल

उत्तर (क) 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता की इन पंक्तियों में कवि ने अपनी प्रेमिका के स्नेह का वर्णन किया है। कवि अपने भविष्य के प्रति सशंकित है। कवि ने खड़ी बोली हिन्दी में धारदार और सशक्त तरीके से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। कोमलता मानव की तरह क्रियाएँ करती दिखाई दे रही हैं अतएव मानवीकरण अलंकार है। 'ममता के बादल' में रूपक अलंकार है। 'पिराती' शब्द प्रेम को अभिव्यक्त करता है। मुक्त छंद में रचित इन पंक्तियों की शब्दावली मिश्रित है।

(ख) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के इस अंश में कवि बताता है कि मीडिया कार्यक्रम को लोकप्रिय बनानेके लिए किसी की मजबूरी को भी उभार सकता है। वे मजबूर व्यक्ति को समाज के समक्ष बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं। उन्हें लोगों की समस्याओं से मतलब नहीं होता। इस अंश में 'फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर' जैसा वाक्यांश मीडिया की

Scanned with CamScanner

मानसिकता को दर्शाती है। लाक्षणिकता और व्यंजना पूरे अंश में है। भाषा में प्रवाह है और मुक्त छंद में सहज अभिव्यक्ति हुई है।

प्र. 9 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2

(क) बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे? -'निशा निमंत्रण' कविता के आधार पर बताइए।

(ख) 'सीमा के बंधन कहाँ टूट जाते हैं?' 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर बताइए।

(ग) 'कवितावली' के छंदों के आधार पर बताइए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर (क) 'बच्चे' से यहाँ आशय 'चिड़िया के बच्चों' से है। चिड़िया भोजन की तलाश में दिन-भर घर से बाहर रहती है। सांझ ढलते ही बच्चे इस आशा में घोंसलों से झाँकते हैं कि उनके माँ-बाप उनके लिए भोजन लेकर आते होंगे। यह बच्चों की आशावादिता है।

(ख) 'कविता के बहाने' में कवि बताता है कि सीमा के बंधन वहाँ टूट जाते हैं, जहाँ रचनात्मक कार्य होते हैं। यह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या काल (समय) की हो। रचनात्मक ऊर्जा ही सीमाओं के बंधन को तोड़ने में कारगर होती है।

प्र. 10 अधोलिखित गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

उन सिख बीबी को देखकर साफिया हैरान रह गई थी, किस कदर वह उसकी माँ से मिलती थी। वह उसकी भारी-भरकम जिस्म, छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगाया करती थी। चेहरा जैसे कोई खुली हुई किताब। वैसा ही सफेद बारीक मलमल का दुपट्टा जैसा उसकी अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थी।

जब साफिया ने कई बार उनकी तरफ मुहब्बत से देखा तो उन्होंने भी उसके बारे में घर की बहू से पूछा। उन्हें बताया गया कि मुसलमान है। कल ही सुबह लाहौर जा रही हैं अपने भाइयों से मिलने, जिन्हें इन्होंने कई साल से नहीं देखा। लाहौर का नाम सुनकर वे उठकर साफिया के पास आ बैठीं और उसे बताने लगीं कि उनका लाहौर कितना प्यारा शहर है। वहाँ के लोग खूबसूरत होते हैं, उम्दा खाने और नफीस कपड़ों के शौकीन, सैर-सपाटे के रसिया, जिंदादिली की तस्वीर।

(क) साफिया सिख बीबी को देखकर क्यों हैरान रह गयी? 2

(ख) सिख बीबी ने साफिया को क्या बताया? 2

(ग) सिख बीबी को साफियाके बारे में क्या पता लगा? 2

(घ) लाहौर के लोगों की क्या विशेषताएँ हैं? 2

अथवा

इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए पर ज्यों की त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी -कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं। हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं?

काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

(क) पाठ तथा लेखक का नाम बताइए। 2

Scanned with CamScanner

(ख) कौन-सी बातें लेखक के मन को कचोटती हैं? 2

(ग) भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार कौन है और क्यों? 2

(घ) 'पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती हैं' आशय स्पष्ट करें। 2

उत्तर (क) साफिया यह देखकर हैरान रह गयी कि सिख बीबी किस कदर उसकी माँ से मिलती थी। सिख बीबी को देखकर उसे अपनी अम्मा की भी याद आई थी।

(ख) सिख बीबी ने जब यह जाना कि साफिया लाहौर जा रही है तो वे उसके पास आ बैठीं और लाहौर की विशेषताएँ बताने लगीं।

(ग) सिख बीबी को साफिया के बारे में पता लगा कि वह मुसलमान है। उन्हें यह भी पता चला कि साफिया की जिन भाइयों से कई साल से मुलाकात नहीं हुई उनसे मिलने लाहौर जा रही है।

(घ) लाहौर के लोगों की विशेषताएँ होती हैं, जैसे-वहाँ के लोग खूबसूरत, उम्दा खाने और नफीस कपड़ों के शौकीन और सैर सपाटे के रसिया होते हैं। यों कहें कि जिंदादिली की तस्वीर।

प्र. 11 निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **3+3+3+3 = 12**

(क) 'अगर ठीक पता नहीं है कि क्या चाहते हो तो सब ओर की चाह तुम्हे घेर लेगी। 'बाजार दर्शन' के आधार पर इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) लेखक नें ऐसा क्यों कहा है कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षो तक काफी कुछ कहा जाएगा।?

(ग) 'हृदय की कोमलताको बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है'। हजारीप्रसाद द्विवेद के निबंध 'शिरीष के फूल' के आधार इस विचार का विश्लेषण कीजिए।

(घ) लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

(ङ) नमक ले जाने के बारे में सोफिया के मन में उन्हें द्वन्द्वों के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (क) 'बाजार दर्शन' जैनेन्द्र कुमार का निबंध है। बाजार तरह-तरह की रंग-बिरंगी आकर्षक चीजों से भरा रहता है। हमें-अपनी आवश्यकताओं का पता होना चाहिए। हम क्या चाहते हैं, यह हमारे सामने स्पष्ट होना चाहिए। यदि हम नहीं जानते कि हम चाहते क्या हैं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेगी। हमें सब नहीं चाहिए। चयन का विवेक आवश्यक है। इसके लिए अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की सार्थक समझ जरूरी है। इस कथन का सही आशय है।

(ख) चार्ली चैप्लिन ने विश्व सिनेमा को अत्यधिक प्रभावित किया है। आज विश्व सिनेमा विकास के कई चरण पार कर चुका है। तकनीक की निकटता ने विश्व-स्तर पर सिनेमा की तस्वीर बदलकर रख दी है लेकिन एक दौर वह भी था जब बहुत कम संसाधनों -उपकरणों के माध्यम से चार्ली चैप्लिन की प्रभावशाली फिल्में सामने आयी थी। दर्द, हँसी में घुल-मिलकर आया था। चार्ली चैप्लिन के योगदान का आकलन तब तक समग्रता में नहीं हो सकता, जब तक उनके द्वारा निर्मित सब फिल्में और इस्तेमाल न की गयी सब रीले सामने नहीं आ जातीं और इनकी विशद् चर्चा सामयिक और सार्वकालिक संदर्भो में नहीं होती।

(ग) शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करता है। उसका जीवन कठिन संघर्षों का जीवन है। फिर भी वह हार नहीं मानता। हिम्मत नहीं हारता। वह कर्मठ है। कर्मयोगी है। लेखक ने इसी संदर्भ में अपने विचार की अभिव्यक्ति की है। हृदय की कोमलता की रक्षा जरूरी है। हम निर्मम नहीं हो सकते। हमें निर्मम नहीं होना चाहिए। हृदय की कोमलता की रक्षा के

Scanned with CamScanner

क्रम में कभी-कभी कठोर व्यवहार भी अपेक्षित होता है। कठोरता का कवच आंतरिक कोमलता की रक्षा में सहायक होता है। यदि अंतर्मन भी कोमल हो और बाह्य तौर पर व्यक्ति भी, तो आत्म-तत्त्व की रक्षा नहीं की जा सकती। शिरीष के फूल के बहाने लेखक ने कोमलता के साथ कठोरता की कतिपय परिस्थितियों में आवश्यकता का रेखांकन किया है।

(ङ) लेखक ने 'दासता' को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने -दिखाने का प्रयास किया है। केवल कानूनी पराधीनता दासता नहीं है। दासता में वह स्थिति भी शामिल है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरों द्वारा निर्धारित एवं कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग का होना संभव है जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरूद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। वह जो काम स्वयं करना चाहे, वह न कर सके, दूसरों की इच्छा के अनुरूप काम करने को विवश कर दिया जाए, यह दासता ही है।

प्र. 12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 3+3+3=9

(क) पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप कह सकते हैं कि "सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी"?

(ख) स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ? 'जूझ ' शीर्षक पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ग) किशनदा ने यशोधर बाबू की क्या सहायता की थी?

(घ) ऐन ने अपनी डायरी में इमारत के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर (क) लेखक आम थानवी ने बताया है कि सिंधु सभ्यता की खुदाई के दौरान वहाँ से मिट्टी के उपकरण मिले हैं। इन चिह्नों से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि लोग समय के अनुरूप इन वस्तुओं का उपयोग करते थे। इनकी नगर योजना के सामने आधुनिक नगर भी फीके पड़ते हैं। सड़कों, नालियों तथा गलियों को साफ-सुथरा रखने की उनकी पद्धति उनकी समझ को बताती है। अत: कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।

(ख) लेखक के एक अध्यापक मराठी भाषा को बड़े आंनद से पढ़ाते थे। वे भाव, छंद, लय के ज्ञाता थे और मधुर स्वर में कविता पाठ करते थे। उन्हीं अध्यापक से प्रेरित होकर लेखक के मन में ये विचार आया कि वह भी कविता लिखेगा। जब वह खेतों में काम करता था तो उसे काफी समय मिल जाता था। उस वजह से लेखक ने कविताएँ लिखनी शुरू कर दीं। अपनी कविताओं को वह अपने अध्यापक को दिखाता था ताकि उनकी कमियों को दूर कर सकें।

(ग) यशोधर जिस समय दिल्ली आये थे, उस समय उनकी आयु सरकारी नौकरी के अनुरूप नहीं थी। इस कठिन समय में किशनदा ने उनकी बहुत मदद की। उन्होंने यशोधर को तत्काल पचास रूपये भी दिये जिससे वह नये कपड़े सिलवा सके तथा कुछ पैसे अपने घर भेज सके। उन्होंने उसकी शिक्षा में भी सहायता की। नौकरी भी किशनदा ने उन्हें दिलाई थी। इस प्रकार किशनदा ने उनकी बहुत सहायता की।

प्र. 13 निम्नलिखित में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 3+3 = 6

(क) बसंत पाटिल नामक लड़के ने आंनदा को कैसे प्रभावित किया?

(ख) कोठार किसलिए इस्तेमाल होते थे? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर उत्तर लिखिए-

(ग) ऐन के अनुसार युद्ध में घायल सैनिक गर्व का अनुभव क्यों करते थे?

उत्तर (क) बसंत पाटिल एक होनहार, पढाई में अव्वल परंतु शारीरिक तौर पर कमजोर बच्चा था। आंनदा उसकी प्रतिभा तथा शांत स्वभाव को देखकर प्रभावित हुआ। उसने मॉनीटर

Scanned with CamScanner

बनने के लिए बड़ा परिश्रम किया। उसने किताबों पर अखबार की जिल्द चढ़ाई। वह अपना बस्ता ठीक तरीके से रखने लगा। उसका मन एकाग्र होने लगा और धीरे-धीरे गणित विषय में उसकी अच्छी गति हो गयी। जैसे किसी गुणी व्यक्तित्व के संसर्ग से व्यक्ति गुणी हो जाता है वैसी ही स्थिति आंनदा के साथ हुई।

(ग) ऐन ने युद्ध में घायल सैनिकों के बारे में रेडियो पर सुना था और उसने जैसा सना वैसा ही वर्णन अपनी डायरी में कर दिया। घायल सैनिक इसलिए गर्व का अनुभव कर रहे थे कि उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े तानाशाह से हाथ मिलाया था। इसके अतिरिक्त उन सैनिकों ने अपने देश की रक्षा के लिए जो गोलियाँ खायी थीं या फिर बर्फ पर चलते-चलते अपने पाँव गँवा दिये थे। वे अपने त्याग को लेकर गर्व महसूस कर रहे थे।

प्र. 14 यशोधरा बाबू को अपने बेटों से बहुत शिकायतें हैं क्यों? **5**

अथवा

पापा ए॰एस॰एस॰ से बुलाए जाने के नोटिस की खबर सुन डायरी लेखिका अवाक् क्यों रही गयी?

उत्तर यशोधरा बाबू को अपने बेटो से कई शिकायतें हैं। भूषण का सरकारी नौकरी न करना उनकी समझ में नहीं आता। बेटे कोई भी नयी चीजें खरीदें, वे सबसे पहले यही प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं कि यह अनावश्यक है। इसकी कोई जरूरत ही नहीं थी। बेटों ने जब गैस का चूल्हा जुटाया तो उन्होंने इसका विरोध किया। उनकी नजर में यह अनावश्यक था। इस पर बनी रोटी उन्हें अच्छी नहीं लगती थी। और जब फ्रिज खरीदा गया तब भी यही प्रतिक्रिया थी। इसमें रखा खाना बासी हो जाता है और बासी खाने के लिए इतना खर्च अर्थहीन है।

वे ये देखते और महसूस करते थे कि मिलने आनेवाले लोग इन परिवर्त्तनों को, इन नए उपकरणों को देखते तो उन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता था, लेकिन उससे उनके सामने इन चीजों की अनावश्यकता प्रमाणित नहीं होती थी।

वस्तुतः बेटे आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो रहे थे। परिवर्त्तन आसानी से स्वीकार करना, बेटों की तरह यशोधर बाबू के वश की बात नहीं थी। वे पुराने विचारों के व्यक्ति थे और, अचानक बदलने की उनसे अपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी। पुराने विचारों के होने और लीक असानी से न छोड़ पाने के परिणामस्वरूप उन्हें अपने बेटों से कई तरह की शिकायतें रहीं।

Scanned with CamScanner